

15²/₂₃ इच्छिवरता प्राणी अनुपाचित / आवान
 आवान गडे इच्छिवरता प्राणी अनुपा
 प्राणी स्वयं उपाचित मही दुर / इच्छिवरता
 परिवारी 1:2 भी अनुपाचित / बीच परिवारी
 की लकी के नदीस भी अक तक
 प्रकृत मही फिर जर है / म्हापाल्य लमादे
 हे पूर्व एक बार पुनः आवान आवान
 गडे / इच्छिवरता प्राणी अनुपा परिवारी स्वयं
 उपाचित मही दुर / इतः प्राणी सब
 आत्म हाजरी आत्म देवी से खारी किम
 जल ही प्रजापती के लाल शुभा होकर
 म्हापाल्य से काम हो एके बार प्रजापती 15/1/2018
 के समय सम्पन्न की जावे।

(रामचन्द्र खटीक)
 सहायक कलेक्टर एवं
 उपखण्ड अधिकारी
 चित्तौड़गढ़